IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लार्ड मेय ो – एक घुमंतू वायसराय

अनूप कुमार शर्मा
सहायक आचार्य इतिहास
रीजनल गर्ल्स कॉलेज ,
उदयपुरवाटी, नीमकाथाना, (राजस्थान)

शोध सारांश

एक कमजोर राष्ट्र को शक्तिशाली देश द्वारा अपना उपनिवेश बनाए जाने के सिद्धांत का प्रतिपादन इंग्लैंड के विद्वान हॉब्सन ने अपनी पुस्तक "IMPERIALISM A STUDY" (साम्राज्यवाद का अध्ययन ,1902) में किया। 31दिसंबर 1600 ई.को ईस्ट इंडिया कंपनी ने रानी एलिजाबेथ से रॉयल चार्टर प्राप्त किया और लगभग 3 शताब्दियों के भीतर ब्रिटिश शासन 1 व्यापारिक शक्ति से परिवर्तित होकर दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्तियों में से एक हो गई जिसके बारे में कहा जाता था " वह साम्राज्य था जिसका सूर्य कभी अस्त नहीं होता था" ।

ewy 'kCn %& गवर्नर, ईस्ट इंडिया, वायसराय, शिक्षा, अंग्रेजी साम्राज्य।

प्रस्तावना –

ब्रिटेन ने अपनी साम्राज्यवादी नीति की प्राप्ति अपने उपनिवेश की मजबूत एवं कुशल नौकरशाही के बल पर प्राप्त की है और भारत में उसने श्गवर्नर जनरल' और 'वायसराय' के माध्यम से नियंत्रण स्थापित किया जब ईस्ट इंडिया कंपनी भारत आई तो उसने 'बंगाल के गवर्नर' पद के माध्यम से बंगाल पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। बंगाल के पहले गवर्नर श्रॉबर्ट क्लाइवश और अन्य प्रेसीडेंसी मुंबई एवं मद्रास के पास अपने स्वयं के गवर्नर थे बाद में रेगुलेटिंग एक्ट 1773 के अंतर्गत बंगाल के बंगाल के गवर्नर पद का नाम बदलकर 'बंगाल का गवर्नर जनरलश कर दिया गया एवं मद्रास व बंबई के गवर्नर, बंगाल के गवर्नर के अधीन कर दिए गए बंगाल के पहले गवर्नर जनरल श्वारेन हेस्टिंग्स' थे

"1833 ईस्वी के चार्टर एक्ट" द्वारा बंगाल के गवर्नर का पद नाम पुनः बदलकर 'भारत का गवर्नर जनरल' रख दिया गया भारत के इस पदनाम के पहले गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक थे।

"भारत सरकार अधिनियम 1858" मैं भारत के गवर्नर जनरल का नाम बदलकर भारत का वायसराय कर दिया गया भारत के पहले वायसराय 'लार्ड केनिन' थे।

लार्ड मेयो –

मेयो का जन्म 21 फरवरी 1822 ई. मैं आयरलैंड के डबलिन में हुआ । 1847ई. में अनुदार दल की तरफ से संसद सदस्य बना, 1852 ई. से 1866 ई. तक वह आयरलैंड का तीन बार मुख्य सचिव चुना गया । वायसराय के रूप में उसकी नियुक्ति अनुदान दल के प्रधानमंत्री डिजरेली द्वारा की गई, किंतु उसके व्यापक दृष्टिकोण को देखते हुए गलेडस्टन के नेतृत्व में बने नए मंत्रिमंडल ने उसकी नियुक्ति की पुष्टि की ।उसका कार्यकाल 12 जनवरी 1869 ई.से 8 फरवरी1872ई. तक था।

लार्ड मेयो को भारत के सबसे घुमक्कड़ वायसरायो में गिना जाता है भारत के चौथे वायसराय लॉर्ड मेयो ने अपने 3 वर्ष के कार्यकाल के दौरान करीब 20000 मील का सफर तय किया जिसमें अधिकतर घोड़े की पीठ पर

बैठकर किया। उसके बारे में मशहूर था कि वह 1 दिन में घोड़े की पीठ पर बैठकर 80 मील तक चले जाया करता था इसके अलावा उन्होंने उस समय उपलब्ध उन सभी यातायात के साधनों का उपयोग किया – जिनमें स्टीमर,रेल, हाथी यहां तक कि वह उंट भी थे

जे एच रिवेट कार्णक अपनी किताब 'मेनी मेमोरीज' मैं लिखते है "एक बार मध्य भारत में मेयो को पता चला कि एक स्थान पर जाने के लिए सिर्फ बैलगाड़ी का ही सहारा लिया जा सकता है, उन्होंने अपने पायजामे के ऊपर कोट पहना और बैलगाड़ी में बिछी पुआल पर लेट गए उन्होंने अपना सिगार सुलगा कर ऐलान किया कि इससे सुकून की जगह हो ही नहीं सकती सुबह अपने गंतव्य पर पहुंच कर उन्होंने कहा मुझे बहुत अच्छी नींद आई उतरकर उन्होंने अपनी यूनिफार्म पहनी और कोट पर लगे पुआल के तिनके को झाड़ के नीचे गिराया"

आर्थिक सुधार –

1870 ई. में लार्ड मेयो द्वारा वित्तीय विकेंद्रीकरण की नीति आर्थिक सुधारों के क्रियान्वयन में उनकी दक्षता का एक शानदार उदाहरण है इस प्रस्ताव का उद्देश्य सर्वोच्च शाही सता द्वारा प्रांतीय सरकारों को सार्वजनिक कार्यों, चिकित्सा सुविधाओं और शिक्षा के क्षेत्र में धन के आवंटन की जिम्मेदारी दी उनका मानना था कि धन के इस तरह के स्थायीकरण से स्वशासन के विकास में मदद मिलेगी। उत्तर पश्चिम, पंजाब ,बंगाल और मद्रास जैसे विभिन्न क्षेत्रों ने इस नीति को लागू करने के लिए नगरपालिका करो की शुरुआत की। लॉर्ड मेयो ने नागरिक प्रशासन से संबंधित सैन्य व्यय और अन्य खर्चों को बहुत कम कर दिया।

उसने नमक शुल्क लागू किया और आयकर 1 से बढ़ाकर 2.5 कर दिया। उन्होंने सिंचाई वह अन्य सेवाओं से संबंधित लोक निर्माण विभाग का कुशल निरीक्षण किया राजस्व कृषि और वाणिज्य विभाग की स्थापना उनके द्वारा की गई। उनका मानना था कि भू राजस्व विभिन्न प्रांतों में एक समान नहीं होना चाहिए बल्कि उपज की मात्रा और भूमि की उर्वरा के आकलन पर आधारित होना चाहिए। 1870ई. मैं लाल सागर मैं समुद्री तार बिछाए जाने के कारण गवर्नर जनरल ब्रिटिश सरकार के संबंधों में काफी बदलाव आ गया। 1869ई. मैं उनके आदेश से डब्लू डब्लू हंटर ने गजेटियर तैयार करने की विशाल योजना बनाई जो 'इंपिरियल गैजेटियर ऑफ़ इंडिया' के रूप में सामने आई इसके कुल 23 भाग प्रकाशित हुए।

शिक्षा –

भारत में जैसे ही अंग्रेजी साम्राज्य का विकास हुआ वैसे ही अंग्रेजों को आपसी बातचीत व पत्र व्यवहार के लिए,साथ ही प्रशासनिक सुविधाओं के लिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाना चाहा। राजस्थान में भी इसी भावना से प्रेरित होकर भरतपुर के तत्कालीन पोलिटिकल एजेंट वाल्टर ने सर्वप्रथम ए जी जी कर्नल कीटिंग को यह सुझाव दिया कि राजपूत शासकों और बड़े सामंतों के पुत्रों के लिए पृथक कॉलेज की स्थापना की जाए कीटिंग ने यह सुझाव गवर्नर जनरल लार्ड मेयो के सम्मुख प्रस्तुत किया लॉर्ड मेयो की भी इच्छा थी कि इंग्लैंड के 'ईस कॉलेज' के समान राजस्थान में भी कॉलेज की स्थापना की जाए 1870ई.में मेयो के लिए अजमेर में एक विशेष दरबार का आयोजन किया गया इस दरबार में उस समय के राजस्थान के शासकों व सरदारों ने भाग लिया इसमें लॉर्ड मेयो ने अजमेर में इस विशिष्ट कॉलेज की स्थापना की। मेयो कॉलेज का आर्किटेक्चर मेजर मांट ने तैयार किया मुख्य भवन जून 1885 में बनकर तैयार हुआ, इसमें 3.28 लाख रुपए खर्च हुए ।

यहां के सामंतो और राजाओं ने कॉलेज को खोलने का स्वागत किया और इससे आर्थिक सहयोग भी दिया । अक्टूबर 1875 में जब यह कॉलेज शुरू हुआ तो इस कॉलेज में प्रवेश लेने वाला प्रथम छात्र अलवर नरेश मंगल सिंह थे। 7 नवंबर 1885 ई.में डफरिन ने मेयो कॉलेज के मुख्य भवन का उद्घाटन किया ।

मेयो कॉलेज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राजपूत राज्यों के भावी शासकों को ब्रिटिश शासकों के प्रति स्वामी भक्ति वह आज्ञाकारी कि भावना का दृढ़ करना था इसलिए छात्रों को बुद्धि ,विद्या,तर्कशैली,रहन–सहन खान–पान तथा आचार–विचार आदि दृष्टि से अंग्रेज बनाने का प्रयत्न किया गया। और इसके परिणाम सामने भी आए, आगे आने वाले राजाओं और सामंतो के मन में अब अंग्रेजो के प्रति उतनी नफरत नही रही अब वो अंग्रेजो के प्रति स्वामिभक्त हो गए।

मेयो कॉलेज का मॉडल लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में रखा हुआ है इसके अलावा जिस चांदी की करनी से इसकी नीव रखी गई वह मेयो कॉलेज के म्यूजियम में प्रदर्शित की गई है।

पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह, जसवंत सिंह जसोल, उदयपुर राज परिवार के अरविंद सिंह मेवाड़, क्रिकेटर अरुण लाल यहां तक कि अभिनेता विवेक ओबरॉय भी इस कॉलेज में पड़े हुए विद्यार्थी हैं।

जनगणना –

मेयो के समय भारत में पहली जनगणना 1871 में हुई। जनगणना का मेमोरेंडम एक सिविल सेवक हेनरी बटरफील्ड द्वारा लिखा गया । जनगणना में सभी प्रांतों का प्रतिनिधित्व नहीं था और जानकारी भी अलग–अलग समय पर एकत्रित की गई थी ब्रिटिश भारत में जनसंख्या घनत्व 131 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था।

मृत्यु –

फरवरी 1875 में वायसराय/ गवर्नर जनरल पोर्ट ब्लेयर में दंड बस्ती को निरीक्षण करने आए मेयो अंडमान गए तो यहां की कुल जनसंख्या 8000 थी जिनमें 7000 कैदी 900 महिलाएं और 200 पुलिसकर्मी थे।

मेयो की अंडमान यात्रा 8 फरवरी 1872 को शुरू हुई सुबह 9:00 बजे उनका जहाज ग्लास्गो ने पोर्ट ब्लेयर की जेटी पर लंगर डाला। उतरते ही उन्हें 21 तोपों की सलामी दी गई उसी दिन उन्होंने रॉस आईलैंड पर यूरोपीय बंकरो और कैदियों के कैंप का मुआयना किया उन्होंने अपने दल के साथ चाथम द्वीप का दौरा किया जब चाथम द्वीप पर उनके सभी कार्यक्रम समय से पहले समाप्त हो गए तो उन्होंने कहा कि अभी सूरज डूबने में एक घंटा बाकी है क्यों न समय का सदुपयोग किया जाए और माउंट हेरिस्ट का नजारा लिया जाए

सर विलियम विल्सन हंटर जो इस यात्रा में मेयो के साथ थे ने मेयो की जीवनी श्लाइफ ऑफ अर्ल ऑफ मेयो श्मैं लिखते हैं ष्माउंट हेरिस्ट करीब 1116 फीट की ऊंचाई पर था उसके चढ़ाई बहुत सीधी थी कड़ी धूप में चढ़ते हुए उनके दल के अधिकतर सदस्य थक कर निढाल हो गए लेकिन वो इतने तरोताजा थे कि उन्होंने साथ चल रही घोड़ी पर चढ़ने से इनकार करते हुए कहा इसका कोई और इस्तेमाल कर ले, चोटी पर पहुंच कर उन्होंने 10 मिनट तक सूर्यास्त का आनंद लिया और अपने आप से कहा कितना हसीन है यह सब"

जब तक मेयो का दल वापस जाने के लिए नीचे उतरा अंधेरा घिर गया था होपटाउन जेटी पर एक नोका वायसराय को उनके जहाज तक ले जाने के लिए इंतजार कर रही थी मशाल लिए हुए कुछ लोग वायसराय के साथ थे जिनमें कुछ भारतीय भी थे मेयो के दाहिनी तरफ उनके निजी सचिव मेजर ओवेन बर्न और बाएं तरफ अंडमान के चीफ कमिश्नर डोनाल्ड स्विबर्ट थे।

कुछ ही मिनटों में हेनरी लॉकवुड ने अचानक एक तेज छपाके की आवाज सुनी मुड़कर देखने पर उन्होंने विचलित वायसराय को पानी के अंदर अपने बालों को चेहरे पर से पीछे करते हुए देखा वायसराय को उनके निजी सचिव मेजर ओवनबर्न द्वारा उन्हें पानी से बाहर निकालने में मदद की गई और पोत घाट पर खड़े एक ट्रक के पास बिठाया गया,तब लॉकवुड को अहसास हुआ की लॉर्ड मेयो के बाएं कंधे से खून बह रहा है उन्होंने तुरंत अपना रुमाल घाव पर रख दिया और अन्य लोगों ने मेयो के हाथ व पैर रगड़े जिससे उनके शरीर के अंदर खून का बहाव जारी रहे।

वायसराय को शीघ्र ही जहाज पर लाया गया उनके बाई और भारतीय मूल के पहरेदारो ने एक व्यक्ति को पकड़ लिया और उसकी पिटाई करने लगे लोकवुड ने उस व्यक्ति को छुड़ाया, व्यक्ति को बांधा गया उसके गले में एक तख्ती थी जिस पर लिखा था–

शेर अली क्र. 15557, आजीवन कारावास। स्टाफ सर्जन आलिव बार्नेट ने बताया मेयो के शरीर में दो 1.5 इंच गहरे चीरे लगे थे ।उसी शाम 8.50 तक मेयो को मृत घोषित कर दिया गया।भारत सरकार के सचिव (विदेश विभाग) और बर्मा के मुख्य आयुक्त ने पूछा की वायसराय को क्यों मारा तो शेर अली ने कहा "मेरा नसीब, खुदा ने हुक्म दिया इस वास्ते किया, मेरा शरीर कोई आदमी, नहीं मेरा शरीर खुदा है।अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के प्रांतीय न्यायालय को 9 फरवरी 1872ई.को जल पोत ग्लास्को पर एकत्रित किया पोर्ट ब्लेयर पुलिस अधीक्षक, उप अधीक्षक द्वारा अदालती कार्यवाही क्रियान्वित की गई 2 भारतीय व 10 यूरोपीय गवाह न्यायालय में पेश हुए उन्होंने अपने विवरण प्रस्तुत किए उन्होंने शेर अली द्वारा प्रयोग में किए गए हथियार की भी पहचान कर ली।

22 फरवरी 1872 को मुख्य न्यायधीश सर रिचर्ड काउच और जज लुईस एस जेनसन ने "द क्वीन बनाम शेर अली कैदी "दंड संहिता की धारा 302 के तहत पोर्ट ब्लेयर के अधीक्षक को शेर अली को मौत की सजा देने की पुष्टि की।

उपसंहार – लार्ड मेयो ने वित्तीय विकेंद्रीकरण की भावना को समझा, और इसे भारत में शुरुवाती स्थिति में लागू किया। अपने घूमने के शोक के कारण ही वो भारत के अलग – अलग क्षेत्रो में जा पाया । मेयो कॉलेज की स्थापना के बाद ही उसी की तरह राजकोट में राजकुमार कॉलेज की स्थापना की गई। जनगणना उसके द्वारा उठाया गया क्रांतिकारी कदम था जिसके कारण ही 1881ई. में सम्पूर्ण जनगणना हो पाई। लेकिन मेयो के छठवे अर्ल का अंत अत्यंत दर्दनाक रहा वो ब्रिटिश भारत के एक मात्र वायसराय थे जिनकी हत्या पद पर रहते हुए हुई ।

संदर्भ –सूची

1. आर.ई. फ्रेजर, लार्ड मेयो एक जीवनी (2007) अशोक पब्लिशिंग हाउस शास्त्री नगर, दिल्ली
2. जे.बी. फ्रेजर मेयो का भारत (2010) रोली बुक्स मूलचंद बिल्डिंग, 23, अंसारी रोड, दौब गाजी, नई दिल्ली
3. एस.आर. मेहता लार्ड मेयो और भारतीय राजनीति (2005) कॉन्स्टेबल इंडिया अंसारी रोड, दौबगाजी, नई दिल्ली
4. के.के. गोस्वामी मेयो की वायसरायलती (2003) प्राइड पब्लिशर्स वासुदेव बिरला लेन, कोलकाता
5. आर.सी. मजूमदार लार्ड मेयो और भारतीय समाज (2002 मुंशीराम मानोहरलाल रानी झांसी रोड, नई दिल्ली
6. लार्ड मेयो लार्ड मेयो की डायरी (2001) नेशनल बुक ट्रस्ट नेह भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली
7. जे.बी. फ्रेजर मेयो का भारतीय यात्रा विवरण (2008) इंडिया हिस्ट्री पब्लिशर्स मीराबाग, नई दिल्ली
8. एस.आर. शर्मा लार्ड मेयो और भारतीय शिक्षा (2004) राधाकृष्ण पब्लिकेशंस , कल्याण विहार, नई दिल्ली
9. वी.के.आर.वी. राव मेयो की आर्थिक नीतिया (2006) कामरेड पब्लिकेशंस, वासुदेव बिरला लेन, कोलकाता
10. आर.के. शर्मा लार्ड मेयो और भारतीय संस्कृति (2009) प्राइड पब्लिशर्स वासुदेव बिरला लेन, कोलकाता
11. IGNCA,इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स नोट्स
12. हेनरी वाटर फील्ड पब्लिक डोमेन सांख्यिकी और वाणिज्य विभाग, प्रकाशन तिथि, 1 जनवरी 1875
13. जवाहर लाल नेहरू, द डिस्कवरी ऑफ इंडिया (मेरिडियन बुक्स, लन्दन 1944)